

""बाबा से रूहानी प्यार""

वक्त तय है शिव साजन का मुझसे मिलने का।
तय है वक्त चाँद और सूरज के निकलने का।
सूरत दिखे न उसे दिखे मेरी सीरत उसे बस।
मोहब्बत उसका मजहब है करे मोहब्बत बस।
सच्चा प्रेमी वो मेरा अपने जैसा मुझे बनाएगा।
उसके जैसा बनते ही वो साथ मुझे ले जायेगा।
रूह बनकर देखूँ उसे करे वो नजर से निहाल।
संवार कर बिगड़ी किस्मत करे मुझे खुशहाल।
बसा लूँ अपनी आँखों में बस उसकी तस्वीर।
संग है वो मेरे तो बनेगी बिगड़ी हुई तकदीर।
क्यों ना खोउं मैं अपने साजन के ख्यालों में।
खुशी के मोती आए मेरे नयनों रूपी प्यालों में।

ॐ शांति !!